अतिथि कवि

डॉ. मनोरमा गौतम का काव्य संसार

सफ़ाई कर्मी

वह जो सफ़ाई कर रहा है आदमी
मैला कुचैला
पसीने में तर
उसे देख लोग नाक-भौ सिकोड़ते हैं
बड़बड़ाते हुए
उसकी बगल से निकल जाते हैं
उसके साथ व्यवहार ऐसा करते हैं
जैसे वो कोई मनुष्य नहीं
लोग उन्हें छूने से डरते हैं
उसके साथ खड़े होने से कतराते हैं
उसको घृणित मान
उससे दूरी बनाते हैं
ऐसा करते समय लोग ये भूल जाते हैं
यदि सफ़ाईकर्मी नहीं होते तो
पूरी व्यवस्था ही चरमरा जाती
स्वच्छ वातावरण और
स्वस्थ सेहत हम कैसे पाते।

डॉ. मनोरमा गौतम

जन्म : 21 अक्टूबर 1983
जन्म स्थान: जौनपुर, उत्तर प्रदेश
शिक्षा: पीएच.डी.(हिंदी)दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रवक्ता, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

-:रचना संसार:-

बहुत-सी कहानियां व कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं
लगभग 50 से अधिक आलेख तथा शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।
एक कहानी संग्रह 'एक प्यार ऐसा भी' व एक कविता संग्रह 'बंद दरवाजे के पीछे स्त्री' प्रकाशाधीन है

मैं दिव्यांग हूँ जनाब

मैं दिव्यांग हूं जनाब
कमजोर नहीं
शरीर से विक्षिप्त हूं
लाचार नहीं
लोग मुझे देख मुंह बिचकाते हैं
फिर धीरे से कुछ फुसफुसाते हैं
कभी किसी को दया आ जाए
तो सहानुभूति दे जाते हैं
मुझे कमजोर असहाय
लाचार समझ
मुझ पर दया खाते हैं
मैं कहना चाहता हूं उन सब से
कर जोड़ एक निवेदन
नहीं चाहिए मुझे आपका
ये संवेदन
आंख नहीं है तो क्या
दिमाग तो है
हांथ नहीं है तो क्या
हुनर तो है
पैर नहीं है तो क्या
हौसला तो है
मैं भी कर सकता हूं
आप-सा हर काम
कर सकता हूं
दुनियां में अपना भी नाम
बस आप मुझे सहयोग देते रहना
समय-समय पर मेरा
आत्मविश्वास बढ़ाते रहना
फिर देखना आप मेरी उड़ान
कैसे छूता हूं मैं आसमान
मैं बता देना चाहता हूं
दुनियां को यह बात
है मुझमे भी वही जुनून
वही जज्बात
दिव्यांग कह-कह कर
दो न हमें आघात
शरीर से अक्षम हूं तो क्या
हुनर से हूं सक्षम
बस आप मुझे समझिए न
अपने से कम।

मैट्रो के मुसाफिर

मैट्रो में सफर करते समय
देखे हैं मैंने अनेक चेहरे
झांका है असंख्य लोगों की आंखों में
नापी है कईयों की हृदय की गहराइयां
दिल में कितना उफ़ान लिए ये लोग
भाग रहें हैं न जाने किस अनजाने भय से
आंखों की नमी को मुस्कान में दबाए
हृदय पर भारी बोझ लिए
जबरन मुस्कुराने की जद्दोजहद में
ये लोग भूल गए हैं
कि
आखिरी बार खुलकर कब मुस्कुराएं थे
ठहाके मार कर कब हंसे थे
किसी अपने के कांधे पर सिर रख
कब जी भर रोए थे
नहीं याद इन्हें
शायद याद भी नहीं करना चाहते
डर है इन्हें कि कहीं
किसी ने पढ़ लिया इनका चेहरा
या फिर समझ लिया मन का भाव
तो इनके झूठे स्वाभिमान को

कहीं ठेस न पहुंच जाए
हां!
उसी स्वाभिमान को
जिसको इन्होंने सींचा है वर्षो
कृत्रिम आन की खाद-पानी देकर।

अगर मैं नहीं रही तो

अगर मैं नहीं रही तो
तुम कैसे जी पाओगे
अकेले इस संसार को
बोलो कैसे चलाओगे
कैसे बनोगे दूल्हा
और दुल्हन किसे बनाओगे
कैसे करोगे संतान उत्त्पत्ति
कैसे पिता कहाओगे
किस मां के आंचल में छुपकर
प्यार से दुलराओगे
मां का ममतामय वातसल्य
भला कहां तुम पाओगे
किस बहिन के भाई बनकर
राखी तुम बंधवाओगे
किस बेटी को नम आंखों से
डोली में बैठाओगे
अगर मैं नहीं रही तो
बेटा कहां से पाओगे
जिस कुल पर इतना गुमान करते हो
उस कुल का वंश कहां से लाओगे
कमजोर नहीं मैं

फूलन देवी

फूलन
बड़े प्यार से नाम रखा था
मां-बाबा ने
नहीं जानते थे
उनकी ये फूलन
एक दिन
फूल की तरह ही रौंदी जाएगी
एक बार नहीं
दो बार नहीं
बार-बार
अनेक बार रौंदी गई
ऊंची जाति वालों ने ही नहीं
अपनों ने भी लूटा
जब चाहा जहां चाहा लूटा
तड़पी बहुत मैं
बहुत चीखी चिल्लाई
हाथ जोड़ मदद की गुहार भी लगाई
पर किसी ने नहीं सुनी मेरी आवाज़
कोई नहीं आया
मेरी इज्जत बचाने को
कोई नहीं खड़ा हुआ
मेरी राह में बनकर रक्षक
मदद मांगने मैं जिसके पास भी गई
उसने भी मेरी जिस्म को नोचा
और तब तक नोचा
जब तक मैं अधमरी न हो गई
अपनी लुटी इज्जत को चीथड़े में लपेट
भागती रही मैं इधर से उधर
फिर कहीं जाकर मिला मुझे
सुरक्षित स्थान
हां चंबल!
चंबल ही बना मेरा सुरक्षित स्थान
और बंदूकधारी बने मेरे रक्षक
डाकुओ को मैंने भाई-बंधु बनाया
सिर पे कफन बांध मैंने बंदूक उठाया
और खाई कसम
बर्बाद कर दूंगी उन्हें
खत्म कर दूंगी उनकी पूरी नस्ले
जिन्होंने मुझे जिन्दा लाश बनाया
नाजुक-सी फूलन को
डाकू फूलन बनाया

पेड़ बोलता है

जब काटता है मानव पेड़
कर देता है वन-कुंज
और बाग-बगीचों को ढेर
तब बोलता है पेड़
रे मानव!
क्यूं काटता है तू मुझे
जरा मेरा भी तो अपराध बता दे
अन्न जल हम तुमको देते
फर भी काट तुम हमको लेते
खाने को खाद्य-पदार्थ
और पहनने को वस्त्र देते
सिर पर छत और छाया देते
फिर भी काट तुम हमको लेते
स्वच्छ वातावरण और ऑक्सीजन देते
औषधि और जड़ी-बूटीयां देते
रोगमुक्त हम जीवन देते
फिर क्यूं काट तुम हमको लेते
लकड़ी ईंधन तुमको देते
फर्नीचर और घर-आंगन देते
सुख-सुविधा और साधन देते
फिर भी काट तुम हमको लेते
रे मानव!
लगाती हूं मैं तुझसे गुहार
सुन ले मेरी बात एक बार
प्रकृति से न कर तू खिलवाड़
इसी कारण आता है अकाल और बाढ़
रे मानव
अगर लेता रहेगा तू ऐसे ही प्रकृति से बैर
तो प्रकृति भी नहीं मनाएगी तेरा खैर
अब भी समय है संभल जा
मत कर प्रकृति से छेड़-छाड़
वरना प्रकृति भी करेगी पलटवार
प्रकृति जब अपना प्रकोप दिखाएगी
तब यह दुनिया तहस-नहस हो जाएगी
रे मानव!
मैं करता हूं कर जोड़ अनुरोध बार-बार
प्रकृति से मत कर तू खिलवाड़।
प्रकृति से मत कर तू खिलवाड़।।
प्रकृति से मत कर तू खिलवाड़।।।